* श्रीहरिः *

मोहनी रामायण

रामाश्वमेध-लवकुश कांड

लवकुश युद्ध ।

लेखक

बाबू मोहनलाल माहेश्वरी, "प्रेम कवि"

अलीगढ़ सिटी ।

प्रकाशक

बाबू जसवंतसिंह बुकसेलर, बड़ा बाज़ार

अलीगढ़ सिटी ।

मुद्रक

श्रीज्योतिःस्वरूप शर्मा के "सारस्वत प्रेस" मुहल्ला गम्भीरपुरा अलीगढ़ में छपा ।

प्रथम बार १०००	संवत १९७६ वि० सन् १९१९	मूल्य प्रति पुस्तक =)

॥ श्रीमहेश्वरोजयति ॥

मंगलाचरण
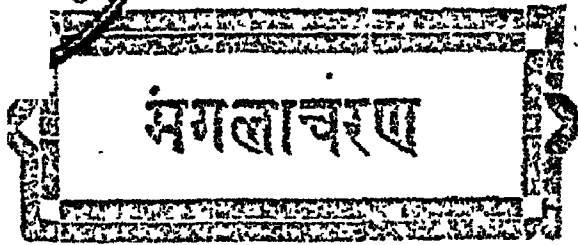
दोहा।

जय जय जय प्रभु महेश्वर, परम प्रेम के इष्ट।
कृपा करहु जनको सदा, लखहु दया की दृष्टि॥

गायन।

जो हरदम उसे तू मनाता रहेगा, तो तेरा भी ध्यान उस को आता रहेगा। मिटेगा तेरे मन का मल मैल सारा, जो मंदिर में उस के पै जाता रहेगा॥ तू जिस नाम और रूप का दास होगा, वोह उस में ही दरशन दिखाता रहेगा। मिलेगा वोह तुझ को नहीं शक है इस में, जो तू प्रेम सच्चा जताता रहेगा॥ जो हरदम उसे तू मनाता रहेगा:—

प्रेम-मोहन-महेश्वरी।

मोहनी रामायण

लवकुश युद्ध

कथा प्रारम्भ।

दोहा।

लवणासुर को जीति के, किये शत्रुहन प्रस्थान।
आगे को चलते भये, सुन्दर ध्वजा निशान॥
रवितनया को वंदि कै, चली अनी हय संग।
हर्षित शूर समूह अति, देखि सैन्य चतुरंग॥
आये चल सह सैन्य के, रिपुसू दन—रण धीर।
देख्यो वाजि सुहावनौ, लवकुश युगल प्रवीर॥

छंद।

गह्वर कानन में आश्रम था, मुनि वाल्मीकि रिषराईका।
घोड़ा आया उस ही थल में, श्रीपति कौशल रघुराई का॥
सीताजी के युग पुत्रोंने, आकर बाजी को साध लिया।
पढ़ पत्र सीस घोड़े को लव, धर पकड़ पेड़ से बांध दिया॥
कटि खैंच बाण धनु में के, बलबीर समर हित खड़े हुए।
अति हर्ष हीय निर्भय प्रवीर, रणकौशल जिन चित चढ़े हुए॥
इतने में साठ सहस योधा, जो संग घोड़े को लाये हैं।
देखा उस को वहां बंधा हुआ, तब सब ही वहां सिकाये हैं॥
रिस रोक बालकनसों पूछी, तुमने में ये घोड़ा बांधा है।
बोले वोह हां हां हमने ही, बांधा हय कहो क्या बांधा है॥
सूरोंने कहा तुम्हो बालक, नहीं इस का भेद जानते हो।
इस ही से तुम को समझाते, तुम इसे नहीं पहिचानते हो॥
हे बाजी बाजी समर का है, बल बीर सूर नृप बढ़ कोंका।
घोड़ा छोड़ो घर को जाओ, यंह खेल नहीं है लड़कों का॥

दोहा।

सुनकर सूरों के वचन, हंस बोले दोउ वीर।
तुम से हमने आज ही, देखे हैं रण धीर॥

छंद।

जिस एक वीर का घोड़ा ये, क्यों नहीं उसे तुम लाये हो।
तुम क्षत्री नहीं सभी कायर, जो संग में इस के आये हो॥

क्या बातें करते खड़े खड़े, बातों में समय बिताय रहे।
क्या भीख मांगते हो वीरो, वीरों के कुछे लजाय रहे॥
क्षत्री बो बात न करते हैं, रण समय वीरता जताते हैं।
तुम से कायर भट बनते हैं, वोह निश्चय धूरि कराते हैं॥
किस चिरते पै घोड़ा छोड़ा, क्या वीरता मन में मानी थी।
क्या पृथ्वी को तुमने सारी, सूरों से सूनी जानी थी॥
जो बल नहीं है लड़ने का तो, हम से नहीं पसें बतलाओ।
सब शस्त्र खोलकर रखदो यहां, घोड़ा छोड़ो घर को जाओ॥

सब वीरों का लड़ना।

बाल वचन बिकाल सुन, सूर न सके संभार।
प्रवल कोपकर क्रोध से, करन लगे हठ रार॥

दोहा।

हैं साठ हज़ार इधर योधा, बलके उनके क्या केने हैं।
केवल बालक हैं उधर दोय, रण करने में अति पैने हैं॥
भट् सुभट विकट रण करते हैं, ज़िजर बल विपुल बाण मारे।
लवने क्षण भर में सब ही के, नाराच काट पृथ्वी डारे॥
सब योधाओं के बाण मार, तन जर्जर करके पटक दिये।
अरि के दल में हलचल करदी, जो बचे प्राण ले सटक दिये॥
अरि सैना सभी विचल करके, रणवीर सु निर्भय अड़े रहे।
दोऊ वीर बांकुरे रणथल में, घोड़े को लिये खड़े रहे॥

दोहा ।

जो रण से भाजे गये, पहुँच शत्रुहन तीर ।
कहा सभी वृतांत को, सुन कोपे बलवीर ॥

ले योधा वीर शत्रुहन संग, रण थल में आये क्रोध भरे ।
निज वीरों को रोते देखा, कुछ घायल धरणी पड़े मरे ॥
ये देख दशा निज वीरों की, धीरों की धूरिगति दिखलाई ।
रिपुसूदन ने मन में तब ही, उन बालकों से लज्जा खाई ॥
कर चतुर शत्रुहन चालाकी, मग राजनीत जतलाने लगे ।
सन्मुख उन बालक वीरों के, ऐसी हैं बात बनाने लगे ॥

(शत्रुहन वचन) सोरठा ।

सुनि मुनि बाल मराल, देउ अश्व तज कोप निज ।
पूज तुम्हें तिहि काल, करहहिं जन्म सो सफल प्रभु ॥

(लवकुश वचन-शत्रुहन से) ।

है कौन नाम नृप नगर कहो, क्यों सैन विपिन में लाये हो ।
किस कारण ये घोड़ा छोड़ा, निर्भय क्यों पत्र लिखाये हो ॥
जो तन बल नहीं तुम्हारे है, तो पत्र बाज तज घर जाओ ।
कटु बचन शत्रुहन सुन बोले, ले शस्त्र समर सन्मुख आओ ॥

(लवकुश बचन)

हैं आप प्रबल बलधारी नृप, जो ऐसे हमैं प्रचारते हैं ।
नहीं ताली पीटे से मृगेन्द्र, भय खाते यों फटकारते हैं ॥

ले लीना कर में धनुषवाण, प्रत्यंचा को फटकारा है ।
मुनि चरन वंदना मन में कर, शर प्रथम एक तक मारा है ॥
सन सननन शरकरचढ़ प्रहार, चलारथ सारथिकोमारदिया ।
कर कटक मूर्छि धरनी पटका, क्षणभरमें रणको छार किया ॥

दोहा ।

एकहि क्षणके प्रचार कर, हने सकल रण शूर ।
विकल शत्रुहन को कियां, मूर्छित रण भरपूर ॥
पड़ गये शत्रुहन मूर्छा में, दलविचलहुआ औरघबराया ।
मुनिवर बालक युग वीरों ने, कर प्रवल युद्ध यों दिखलाया ॥

(कवि वचन)

जिनको अभिमान बड़ा सा था, जो निज घमंड में पूर हुए ।
उनही के अहमति गिरे सकल, खलदल में चकना चूर हुए ॥
देखो घमंड जो करते हैं, ऐसे वोह मारे जाते हैं ।
जो शांत वृति से काम लेय, वोह वीर विजय यों पाते हैं ॥
सैना से भागे वीर तभी, वोह अवधपुरी में आये हैं ।
रघुवीर को सब ही समाचार, ऐसे करके बतलाये हैं ॥

(भगोड़ों का कहना श्रीरामचंद्र से)

हे नाथ! मुनी के बालक दो, सब कटक आपका मार दिया ।
बलवीर शत्रुहन को रघुकुल, धरनी पै उन्होंने डार दिया ॥
हम समाचार पहुंचाने को, चल पास तुम्हारे आये हैं ।
वोह बालक हैं या तेज रूप, धर कर ही लड़न सिधाये हैं ॥

हैं पड़े मूर्छा में स्वामी रिपुसूदन, वहां समर में हैं ।
कीजे सहाय सुधि लीजै प्रभु, ये प्रलय हुई पल भर में हैं ॥

(श्रीराम वचन) दोहा ।

चर के सुनकर के वचन, व्याकुल भये रघुराय ।
लक्ष्मण को कहा जाय के, धीरा करो सहाय ॥

ले जाउ कटक संग में अपने, संग्राम ये करना साध के तुम ।
उन दोनों मुनि के बालकों को, नहीं मारना लाना बांध के तुम ॥
भैया निज कुल में ब्राह्मण की, रिष की मुनियों की रक्षा है ।
ये मारें तो भी मारना नहीं, जाओ यह मेरी शिक्षा है ॥
दोउ वीर जाउ रणधीर करो, बरजोरी मुनि बालक बांधो ।
लाओ पुर में सन्मुख मेरे, कारज रण का जाकर साधो ॥
सुन लक्ष्मण अनुज चले तबही, संग सैना दल सजवाये हैं ।
चल अवधपुरी से चर वर संग, शीघ्र ही रण थल में आये हैं ॥

(लक्ष्मण वचन, लवकुश से)

भ्राता को रण में पड़ा देख, बेसुधि लक्ष्मण को क्रोध हुआ ।
लिया मारने को संधान बान, तब प्रभू बचन का बोध हुआ ॥
कर धनुष हाथ नीचा लिया, मुनि बालक से यों बोल कहा ।
ले जीव जाउ घर मुनि बालक, रघुकुल स्वभाव यों खोल कहा ॥
रघुकुल की है मर्यादि जिही, वो सदा बचन प्रतिपालते हैं ।
ब्राह्मण मुनियों पै रघुवंशी, पिटते भी हाथ नहीं डालते हैं ॥

तुम मुनि बालक मैं रघुवंशी, इस से तुम को समझाता हूं ॥
बस आंख ओट हो जाओ तुम, इस ही में बस अब अच्छा है ।
छोड़ो क्षत्री पन मुनी बनों, मुनियों पै हमारी रक्षा है ॥
जाओ हट जाओ सन्मुख से, नहि बात विशेष बनाओ तुम ।
मत रहो भरोसे में इन के, मेरे मन क्रोध बढ़ाओ तुम ॥

(बालक बचन, लक्षमण से) दोहा ।

सुन लक्ष्मण के बचन, तब विहंसे बालक बीर ।
अनुज बिलोको जाय अब, प्रबल महा रणधीर ॥

तुम योधा हो हमने जाना, रखते हो क्षत्री का बाना ।
पहिले निज भ्राताको देखो, पीछे आ हम से बतलाना ॥
अपनी करनी बरनी निज मुख, क्या कहके हमें डराते हो ।
हमको भय नहीं इन बातों का, जो आंख दिखाय सुनाते हो ॥
हम बन बासी तुम भी जानो, तुम से बलवान अधिक हैं हम ।
केवल ही मुनि बालक नहीं हैं, बालक खल घालक साथ हैं हम ॥
जो पड़े समर में सोते हैं, दर्शन तुम उनका कर आओ ।
जाओ अब उन्हें जगा लाओ, फिर दोनों ही तुम आजाओ ॥
जिन की सहाय को आये हो, पहिले उन को देखो जाके ।
फिर क्षत्रापन दिखला देना, हम कहते हैं ये समझा के ॥

(लक्षमण बचन) दोहा ।

सुने बालकों के बचन, मर्म गर्म उस काल ।
लक्ष्मण आये क्रोध में, लीन्हा धनुष संभाल ॥

मैं बार बार समझाता हूं, शठता तुम क्योंनहि त्यागते हो ।
क्यों खड़े हुए हो मरने को,हे बालकों क्यों नहीं भागते हो ॥
फिर चढ़ा धनुषको लक्ष्मणने, कर क्रोध उन्हें समझाया है ।
देखो ये वेष देख कर के, आती मेरे मन दाया है ॥
मुनियों के बालक बालक तुम, मुनि बालक को गरमाते हो ।
मैं वंश स्वभाव बदलता हूं, तुम सिर पर चढ़ते वाले हो ॥
मैं फिर भी तुम से कहता हूं, अच्छा है समझ अबभी जाओ ।
नहीं भला इकेले तुम मारे, जाओ सहायता ले आओ ॥

(कुश वचन, लक्ष्मण से)

तुम बने सहायक आये हो, देखूं सहाय क्या करते हो ।
जैसे वोह पड़ा समर थल में, तुमभी अब जाकर पड़तेहो ॥
तुम तो ऐसे बतलाते हो, मानो तुम ही हो काल मेरे ।
इस वक्र वक्र से छेद डालूंगा, शठ सुनले अब ही गाल तेरे ॥

(लक्ष्मण, और लवकुश)

यह कहके कुशने लपक जभी, संधान सुबान चढ़ाया है ।
कांपी भूमी डिग मिग डोली, और शेष नाग घबराया है ॥
कुशने बाणों का जाल छिवा, रविका प्रतिबिंब छिपाया है ।
बैरी बल बान देख कर के, क्रोधितहो बाण चलाया है ॥
लक्ष्मण जीने सब बाणों का, निज बाणों से संहार किया ।
बाणों से वेधा बाणों को, बाणों का तब संचार किया ॥
देखा लक्ष्मण ने विकट बली, बचने की चाल निकारी है ।
इक गदा तभी लक्ष्मणजी ने, छाती में कुश के मारी है ॥

खा चोट गदा की लोट पोट, कुश गिरा धरनि मूर्छा खाके।
ये देख झपट लव ने तब ही, लक्ष्मणको फिर घेरा आके॥
हो गई लड़ाई विकट बड़ी, अति महा घोर संग्राम हुआ।
है बली एक से एक प्रबल, कोइ हटा न ये परिणाम हुआ॥

(लव का धावा) दोहा

मूर्छित कुशहि निहार कर, धाये लव रुर शोर।
आवत ही शर उर हन्यों, गिर्यो न महि बल जोर॥
सब मल्ल युद्ध दोउ करने लगे, निज दावेंती अनुहारेत हैं।
गिर धरनी उठते भिड़ते हैं, हुंकार हुँकार प्रचारते हैं॥
लव लपक लिया लक्ष्मणजीको, धरनी के ऊपर डारा है।
तब शेषने रघुकुल मणी सुमरि, लवहृदय वाण इक मारा है॥
लगतही शर लव मूर्छित हो, चक्करखा व्याकुल जाय पड़ा।
कुश जाग मूर्छा से झपटा, लक्ष्मणके सन्मुखआय लड़ा॥

दोहा

मनमें तब विस्मित विकल, लक्ष्मण जी उस काल।
देख प्रबल बल बाल मुनि, भूल गये सब चाल॥
बल थका हृदय में हारो जब, तब शेषने चितमें ध्यान किया।
ये सीय त्यागने का फल है, निजमन में यों अनुमानकिया॥
उस समय शोचके बसमें थे, लक्ष्मण बल बिसराया था।
कुशभीव्याकुलथे विकल महा, मुनि चरणों ध्यान लगायाथा॥
उस ध्यानके करते हीकुश को, स्मर्ण बाण का आया है।
जो महा मुनी से पाया था, वोह मोहन अस्त्र चलाया है॥

महिमा ये मोहन अस्त्र की थी, जिस समय क्रोधकर मारा है।
इस अस्त्रको क्रोधितहो कुशने, लक्ष्मणजी के उर मारा है॥

नाराच छंद।

मोहनास्त्र मार के, गिराय लिये लक्ष्मण।
सैन्य विकल होय तभी, भाग उठी तत्क्षण॥
जाय अवध राम को, जताय दूत यों कही।
अचेत शेष भी हुए, लड़े भिड़े समर महीं॥
दो हैं जु बाल मुनी के, किशोर वय सु सेव है।
प्रतिबिंब आप लगता है, न जाने कौन देव है॥
सिर काक पक्ष धारे हैं, प्रचार वीर मारते।
करौ सहाय राम जी, समर अनुज हैं हारते॥
बालक अजीत बाल रूप, महिमा उन के चाप की।
मोहन बचाओ तो बचे, नहीं हो पराजय आप की॥

(भरत वचन)

भरत जोरि कर कहेउ तब, वचन अमित बिलखाय।
सियत्याग फलहीन विधि, प्रभु कही देखहु जाय॥
ये फल है सीता त्यागन का, मुझको तो यही दिखाता है।
परिणाम सताने का पाया, दुख देता कोइ दुख पाता है॥
ये लक्ष्मण वीर अजित योधा, लंकामें जिन रण भीत किया।
जिन जीता इन्द्र जीत को था, उनको बालकने जीत लिया॥
निश्चय दुष्कर्म का फल है ये, परिणाम है सिया त्यागने का।
नहीं तो श्रीराम सैना का, क्या कामहार और भागने का॥

(राम बचन)

यों शोक समुद्र में मन ही मन, चित भरत जी गोते खाने लगे ।
श्री रामचन्द्र जी विकल होय, तब भरत से यों बतराने लगे ॥
हे भ्रात युद्ध से चित हारे, तुम को अब क्या समझाऊंगा ।
रह जाय यश चाहें यों ही, मैं समर करन को जाऊंगा ॥
ये बालक नहीं मुनी के हैं, जिन लक्ष्मण रण बिचलाये हैं ।
मेरी सम्मति में रावण के, बेटे ये लड़ने आये हैं ॥
मैं इन्हें जाय के देखूंगा, सजवाओ सैन्य न देर करो ।
बुलवाओ मेरे वीर प्रबल, अब पलकी भी न अबेर करो ॥
सुन भरत हुए लज्जित मन में, सुग्रीव विभीषण आये हैं ।
अंगद हनुमान नील नल कपि, रघुनाथ उन्हें समझाये हैं ॥
हे वीरो जाओ रण देखो, तुम भ्रात भरत रखवारे हैं ।
माथा नवाय सब चल दिये, रण भूमी आय प्रचारे हैं ॥

(सोरठा

शोणित सरिता देख, भये सभी भयभीत जिय ।
मरण सुरण अब सेख, आश तजी निजप्राण की ॥
भय भीत थे चितमें यों अपने, दल वीरसभी घबराय रहे ।
इतनेमें सिय सुत लव कुश भी, रण भूमी में हैं आय गये ॥
देखत जिन को भालू कपि के, अवसान विदाहो गये सारे ।
ये देख प्रभाव बालकों का, महावीर वचन बोले प्यारे ॥

हनुमान वचन, लव कुश से

धन धन्य मात पितु हे बालक, जिनने तुम को प्रगटाये हैं ।
हम देख वीरता भये प्रसन्न, घर जाओजीत को पाये हो ॥

(लव कुश वचन हनुमान जी से)

जो भावत सो कहत येहि, तुम जो रहे उचार ।
निज आपे को समझले, योधा भारत हार ॥
घरजाने को हम से सब ने, बोला लड़ भिड़े समर सोने ।
हम तो रण में ही गाज रहे, बोगरज बंत निज बल खोये ॥
तुम भी उन में ही वीर एक, क्या हम को धमकी देते हो ।
मोटे शरीर हो पतलों से, नहीं खड्ग हाथ में लेते हो ॥
बल नहीं है तो घरजाओ तुम, कायरको हम नहीं मारते हैं ।
हम लड़ें उसी से बढ़ कर के, जो रण में हमें प्रचारते हैं ॥
जाओ क्यों वृथा धनुष धारो, क्यों मोटी काय बनाई है ।
रण खेत करो बातें इतनी, लज्जा नहीं तुम को आई है ॥

(भरत वचन) दोहा

सुन लवकुश की बात को, भरत कहा ततकाल
उठो न बैठो पलक अब, बालक प्राण सभाल ॥

गायन थियेटर ।

तभी प्रचार भरत ने, सुनाय बोलि यों कह्यो ।
बालकों समर करौ न, बेल जात है सह्यो ॥
सुन कपीश यूथ रीछ, बानरा करन लगे ।
कर के हूह तरु उपार, रार को करन लगे ।
जूह तरु समूह में, जहां तहां भिडत भये ॥
सैन ले अपार भरत, आन यों लड़त भये ॥

लव खेल बाण बाण से, क्षणेक मांही काटे हैं।
फट फटाय बानरन को, धान रेश डाटे हैं॥

दोहा।

रिपुशर काटे क्षणक में, बानर गये पलाय।
ज्यों मनोर्थ फल दुरुप के, निस्संशय मिट जाय॥
लव ने कर क्रोध बाण मारे, फट कार वीर महि डारे हैं।
संग्राम समर अति जबर हुआ, रण जोधा लड़ कर हारे हैं॥
कर युद्ध विषम संग्राम जीत, कपि सैन जीत कर धाये हैं।
फिर भरत वहां से चले तभी, संग्राम भूमि में आये हैं॥
लखदशा सैन की विकल भरत, अंगद हनुमान बुलाते हैं।
कपि राज रिच्छपति कोनवही, वोह ऐसे वचन सुनाते हैं॥

(भरतजी का बंदरों को समझाना)

हे वीरों ये तो बड़े प्रवल, दोउ बालक वीर दिखाते हैं।
इन दोनों को लेउ बांध जाय, हम ये ही करना चाहते हैं॥
सुन कर ये बात भरतजी की, अंगद लड़ने को धाये हैं।
रण भूमी में रण धीर वीर, कुश अंगद से बतराये हैं॥

(कुश अंगद संवाद) दोहा।

हे अंगद तोहि लाज नहि, करत युद्ध व्यापार।
जिस ने मारा पितु बना, उस का सेवा कार॥
मरवाय पितु अपने को तू, माता को पराये घरमें कर।
आया है लाज छोड़ लड़ने, धिक्कार वीर जा डूबके मर॥

इस कुमतका फल तुमको अब यही, मैं आज भला दिखलाऊंगा।
थोड़े समय में हे अंगद, तुझको यमधाम पठाऊंगा॥

(अंगद बचन)

ये सुन कर अंगद क्रोध उठा, वारूत में अग्नी जाय पड़ी।
उसको फटकार कहा तब ही, और युद्ध को सेना आय अड़ी॥
अंगद अरु कुश का युद्ध हुआ, कपिनील हिमायतको आया।
कुश ने उन दोनों वीरों को, आकाश में जाकर ठहराया॥
फिर बाणों से फटकार मार, दोनों को भूमि पर डाला है।
वोह गिरे भरत जीके सन्मुख, सब ही ने देखा भाला है॥

दोहा

देख दशा युवराज की, गये भरत घबराय।
जामवन्त हनुमंत दोउ, चले समर को धाय॥

(हनुमान और लवकुश का युद्ध.)

हनुमान रिच्छपति दोनों ने, अतिघोर युद्ध उस काल किया।
लवकुश वीरों ने दोनों का, रणमें अतिही बेहाल किया॥
हनुमान बली को पटक भूमि, सैन मूर्छित कर भड़के।
तब समर भरतजी ने किया, लवकुश वीरों से ती बढ़ के॥

(भरतजी का संग्राम लवकुश से)

तकबाण भरतने मार एक, लव को मात्र भुलाया है।
झट कुशने मार भरतजी को, रण शया पर सुलवाया है॥

दोहा

समर भूमि सोये भरत, लवहिं लीन्ह उरलाय ।
सुमिर मातु गुरु चरणयुग, रहे समर जय पाय ॥
इत भरत वीर रण में सोये, चर अवधपुरी को आये हैं ।
श्रीराम से वरना रण वृतांत, सुन राम अधिक घबराये हैं ॥
प्रभु जानते हैं सब लीला को, लीला कारण अवतार भये ।
लीला करने को लीलाधर, सुन युद्ध हार मन हार गये ॥

(श्रीराम वचन)

चर वचनों को सुन रामचंद्र, मख छोड़ दिया येकाम किया ।
सजवायचमू चतुरंगिनीचव, रणथलको प्रभु प्रस्थान किया ॥
कठिन आज्ञा दी प्रभुने, और यज्ञ बंद करवाये हैं ।
तज अवध चले श्रीरामधनी, रण भूमी थल में आये हैं ॥
मस्तक नवाय मुनिबालयुगल, प्रभु निकट आपने बुलवाये ।
वो दोनों वीर प्रवीर बड़े, श्रीराम के सनमुख हैं धाये ॥

(श्रीरामचंद्र जी का लवकुश से पूछना)

सोरठा ।

कहौ मात पितु नाम, वंशावली सुवंश की ।
रहौ कौनसे ग्राम, नाम बताओ आपुनों ॥

लवकुश का कहना रामजी से।

आम नाम हो पूंछते, या लड़ते हो वीर।
कायरताकी वात कहि, टारौ नहीं रणधीर॥

रणधीर जो रण पै आता है, नहीं वातैं ठाली करता है।
वोह तो रण करना जानता है, वातैं नहीं करता लड़ता है॥
तुम युद्ध करन को आये हो, तो युद्ध करौ पल वतलाओ।
जो नहीं युद्ध की समरथ हो, तो धनुष धरौ घर को जाओ॥
हम वृथा वात नहीं करते हैं, वैरी से वात वनाते हैं।
हम तो रण में कौशल करके, सन्मुख सो सभी जताते हैं॥

श्रीराम वचन।

हे वालक वीरो रण धीरो, हे प्रवल वली हे सुकुमारो।
हे मुनि वालक क्षत्री वालक, पितु मात नाम मुख उच्चारो॥

जव तक नहीं नाम जानलूंगा, नहीं रण के सन्मुख आऊंगा।
सुकुमार मनोहर गातों पै, तव तक नहीं शस्त्र चलाऊंगा॥

लवकुश वचन।

सुन वचन राम के प्रेम भरे, नवनीति प्रीत में रचे हुए।
लवकुश दोनों वीरों के भी, हितचित सुनकर उदय हुए॥
वोले प्रभुसों समझा करके, सुनिये हम वंश वखानते है।
सीता माता कानाम है जी, हमपिता नाम नहीं जानतेहैं॥

हां इतना और सुना हमने, हम मात जनक की जाई हैं।
हमको पाला है बालमीक, ये कथा हमारी भाई है॥
नहीं वंश पिता का जाने हम, लवकुश ये नाम हमारा है।
यों रामचंद्र से लवकुश ने, निज वंश भेद उच्चारा है॥
सुन रामचंद्र मन मुसकाये, लीला प्रभु नई दिखावेंगे।
आते हैं सुभट हमारे सब, तुम से रण रंग मचावेंगे॥
ऐसा कहि के श्रीरामचंद्र, मूर्छित कपि भालु उठाये हैं॥
सन्मुख बालक वीरों के तब, तब सब अपने सुभट पठाये हैं।

दोहा।

जामवंत सुग्रीव हनु, अंगद नलिबद मयंद।
यातुधान लंकेश तब, सैन्य अमित स्वच्छंद॥

सब युद्ध करन को रण थल में, फिर राम के भेजे आये हैं।
थे हारे हुए प्रथम ही के, फिर भी रण करी हराये हैं॥
तब तमक विभीषण आया है, लव सन्मुख है सो धाय चला।
लवने प्रचार तबही उसको, ये वचन सुनाये बोल भला॥

(लवकुश वचन—विभीषण से)

हे पापी तैने निज बंधू, उस समर मांहि मरवाया है।
शत्रू से मिला अरे कायर, अब यहां लड़ने को आया है॥
था ज्येष्ठ बंधु रावण तेरा, जो पिता समान कहाया है।
उस की स्त्री को बर जोरी, तैने निज त्रिया बनाया है॥

हे कुलांगार इस स्त्री को, माता कितने ही बार कहा।
फिर रमता उस से कुटिल नीच, राक्षसपशुमतिव्यभिचारिमहा॥
हे माता गामी नीच निलज, क्यों नहीं डूब कर मर जाता।
हे अधम अधर्मी शठ निकृष्ट, निर्लज्ज तू मुख है दिखलाता॥
जा गला काटि निज मर जा तू, माता पत्नी करने वाले।
जा हट सन्मुख आंखों से मेरे, पर संपत के हरने वाले॥
क्यों अपनी मौत बुलाता है, सन्मुख मेरे जो आता है।
तू कैसे गाल बजाता है, क्यों नहीं लौट घर जाता है
सुन वचन विभीपण चल दिया, कर गदा उठा कर मारी है।
लव ने लव में उस को तब ही, ले खंड २ कर डारी है॥
फिर चला त्रिशूल विभीपण ने, भारी कर क्रोध चलाया है।
वोह तन में लव के पल भर में, बस तड़ित समान समाया है॥

दोहा।

दुरशूल कर बंधु दोउ, शर नारेउ पुनि दाप।
जामवन्त कपिराज नल, अंगद करहि विलाप॥
ये बालक त्रिभुवन बली, जीति सकै नहिं कोय।
चलहु प्राण दीजै समर, अमर जगत नहिं कोय॥

एसे कह कर सब उधर धाये, कालजी छोड़२कर लड़ने लागे।
दोनों वीरों ने सब ही को, दिये मार समर चढ़ के आगे॥
हनुमान को लवने बांध लिया, अश्वथल पास टिकाया है।
कुश को रखवारी पर छोड़ा, चल रामचन्द्र ढिग आया है॥

रण में सोये रघुपति देखे, लव लज्जित हो लौटाते हैं।
फिर घोड़ा हनूमान को ले, मुनि आश्रम में चल आते हैं॥

(लव कुश का, सीता माता से कहना)

(छंद)

शुभ अस्त्र पत्र भूषण सुमर्कट, ऋच्छ संग लहि घर चले।
सिय निकट नायेउ माथ, दोउ सुत भेट भूषण दे भले॥

(सीता का पश्चाताप)

पहिचान सिय कपि निरख भूषण, सदम सोइ क्षण महि परी।
इहि बीच मुनिवर सदन आये, सियहिं अति विनती करी॥
हनुमान भालुहि छोड़ सुत, अब समझ तोहि समझायऊ।
रिपुदमन लक्ष्मण सहित, भरतहि राम समर सुवायऊ॥
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुल महं, मोहि विधि विधवा करी।
तजि सोच चंदन अगर आनहुं, जांउ पिय संग अब जरी॥

(वालमीक का समाधान)

मुनि धीर जानकिहि देय, लवकुश संग ले सादर चले।
रण देख बालक चरित देखत, विहंस मुन प्रमुदित भले॥
रथ देखि हय पहिचान प्रभु, कहं जान मुनि आगे भये।
उठ बैठि कौशल नाथ, आरत तनय तब आगे छये॥

सोरठा ।

मुनि मुनिवर बर बैन, जागे रघुपति भयहरन ।
बिहंस उघारे नैन, लीन्हें हृदय लगाय मुनि ॥

मुनि देख राम को बार बार, चित में अपने हरषाये हैं ।
सब कथा सिया के वनकी कहि, लवकुश के चरित सुनाये हैं ॥
मुनि बार बार विस्वासी कर, शिव सूर्य्य विरंच सुसाक्षीकर ।
श्रीरामचन्द्र को राज़ी कर, लवकुश का कर में कर देकर ॥

(मुनि बालमीक की भेंट) ।

मुनि बाल्मीक ने तभी भेंट, श्रीराम के लवकुश कीन्हे हैं ।
ये दोनों तात तुम्हारे हैं, मुनि हर्ष आनंद लीन्हे हैं ॥
श्रीराम सुतों को हृदय लगा, उठि बैठे अति हरषाये हैं ।
नभ देख देख प्रभुपुत्र मिलन, नभ से सुपुष्प बरसाये हैं ॥
लीला से गर्व प्रहारी ने, सब ही का गर्व घटाया है ।
रिपुसूदन लक्ष्मण भरत हनू, सबही का गर्व नसाया है ॥
अमृत की वर्षा दलपर कर, सब अनुज सैन को प्राण दिये ।
सब जय जय करके उठि बैठे, सुन देख सभी हर्षे हिये ॥
श्रीराम ने तब ही लक्ष्मण को, सीता के पास पठाया है ।
लक्ष्मण ने जाय सीय चरणों, सिर नवा सुवचन सुनाया है ॥
हरि इच्छा है बलवान बड़ी, सिय मन में तभी समाई है ।
लक्ष्मण के सन्मुख सीय तभी, प्रभु लीला लख हर्षाई है ॥

दोहा ।

जटिल मणिन सिंहासनहिं, सादर सीय चढ़ाय ।
भये अलोप पताल महिं, महिमा किमि कह जाय ॥

ये लीला करने प्रभु सुतसंग ले, मुनिवर से बिदा हो धाये हैं ।
सब सैन्य सहित श्रीरामचंद्र, निजधाम अवध में आये हैं ॥
पूरण तब यज्ञ किया प्रभुने, विप्रों को सादर दान दिया ।
गोह हेमदान गजदान दिया, सो दान किसी ने नहीं दिया ॥
इस भांति यज्ञ को पूरणकर, प्रभु अनुज सहित छवि पाते हैं ।
हो रहे अवध आनंद घने, घर घर सब मंगल गाते हैं ॥

(कवि बचन)

यों यज्ञ रामने पूर्ण किया, शिक्षा सब ही को दीनी है ।
त्योंही लीला लीलाधर की, कवि प्रेम सहित लिख लीनी है ॥
इस को जो पढ़े सुनावेगा, भवताप पाप अपने खोवै ।
अब तुम भी मोहनलाल कहो, श्रीरामचंद्र की जय होवै ॥

इति श्री

हिन्दी साहित्य कविभूषण बाबू मोहनलाल महेश्वरी प्रेम कवि रचित-रामाश्वमेध-लवकुश युद्ध समाप्त ।

शिवार्पणमस्तु ।

अवश्य पढ़ने योग्य बात ।

प्रिय पाठक वर्ग! यह मोहनी रामायण सर्व साधारण रामभक्तों तथा रामायण के प्रेमियों के अत्यन्त मन भाई है। इसी से बहुत थोड़े ही से समय में चारों ओर फैल गई है। और बहुत से प्रशंसा पत्र भी इसके रचयिता प्रेम कवि बाबू मोहनलाल महेश्वरी को प्राप्त हुए हैं। वह अब की बार इन ही रामायणों के साथ २ प्रकाशित किये जावेंगे।

इस रामायण कथा की रचना से सर्व साधारण का विशेष उपकार और हिन्दी साहित्य के प्रचार की विशेषता जान, प्रसन्न होकर अलीगढ़ की विद्युत परिषद्ने उक्त प्रेमकवि बाबू मोहनलाल महेश्वरीजी को "हिन्दी साहित्य कवि भूषण" की सन्मानित उपाधि प्रदान की है। जो अगामि पुस्तक में प्रकाशित की जावेगी।

प्रकाशक।

बाबू जसवंतसिंह बुकसेलर,

अलीगढ़ सिटी।

खरीदो ! हिन्दी में भी छपगई !! खरीदो !

ब्रज भाषा काव्य में प्रेम कवि की

रामायण की पुस्तकें ।

अंगदपाद	≡)
लक्ष्मण शक्ती	≡)
संजीवन बूंटी (राम विलाप)	≡)
कुंभकरण वध	≡)
लक्ष्मण विजय (मेघनाथ वध)	≡)
सुलोचना सती	≡)
महावीर विजय (अहिरावण वध)	≡)
वीर नारान्तक युद्ध	≡)
वीर तरणी सेना युद्ध (विभीषण सुत वध)	≡)
राम विजय (रावण वध)	≡)
भरत मिलाप	≡)
राम राज्याभिषेक	≡)
लवकुश (रामाश्वमेध)	≡)
अशोक वाटिका में सीता	≡)
विभीषण शरण	≡)
हनुमान मिलाप सुग्रीव बालि युद्ध बालि वध	≡)
सेतु बंध रामेश्वर	≡)
सीता हरण (कपट मृग)	≡)
धनुषयज्ञ	≡)
परशुराम वाद	≡)
वीर अभिमन्यु	≡)

(महाभारत) कुछ तयार होंगी—शेष कांड की पुस्तकें भी शीघ्र छपें।

प्रचारक—पं० सियाराम—शर्मा—कथा—वाचक

पता—जसवन्त पुस्तकालय

अलीगढ़ सिटी ।